August 16, 2024
Saturday

Date :
P. No. : 18

पाठ

पहलवान की ढोलक

फणीश्वर नाथ रेणु

जीवन परिचय ⇒

हिन्दी साहित्य में आंचलिक उपन्यासकार के रूप में प्रतिष्ठित कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु का जन्म 4 मार्च 1921 को बिहार के पूर्णिया जिले के औराही हिंगना ग्राम में हुआ था। इन्होंने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया। इसकी साहित्य साधना व राष्ट्रीय चेतना को मद्देनजर रखते हुए भारत सरकार ने इन्हें पद्म श्री से अलंकृत किया। 11 अप्रैल 1977 को पटना में इनकी मृत्यु हो गई।

प्रमुख रचनाएँ ⇒

उपन्यास – मैला आँचल, परती परिकथा, दीर्घतपा, कितने चौराहे, जुलूस
कहानी संग्रह – ठुमरी, अग्निखोर, आदिम रात्रि की महक, एक श्रावणी दोपहरी की धूप
संस्मरण – वन तुलसी की गंध, ऋणजल धनजल,
रिपोर्ताज – नेपाली क्रांति कथा, इनकी तमाम रचनाएँ पाँच खंडों में रेणु रचनावली नाम से प्रकाशित हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ ⇒

हिंदी साहित्य में फणीश्वर नाथ रेणु आंचलिक साहित्यकार के रूप में प्रसिद्ध रहे हैं। इन्होंने विभिन्न सामाजिक व राजनैतिक आंदोलनों में

सक्रीय रूप से भागीदारी की है।

साहित्य में स्थान => हिंदी साहित्य जगत में आंचलिक साहित्यकार के रूप में आप सदा स्मरणीय रहेंगे।

प्रश्नः 1 कुश्ती के समय ढोल की आवाज़ और लुट्टन के दाँव-पेंच में क्या तालमेल था? पाठ में आए ध्वन्यात्मक शब्द और ढोल की आवाज आपके मन में कैसी ध्वनि पैदा करते हैं, उन्हें शब्द दीजिए।

उत्तरः 1 कुश्ती के समय ढोल की आवाज और लुट्टन सिंह के दाँव-पेंच में एक गहरा तालमेल था। सभी दर्शकों का बहुमत चाँद सिंह के पक्ष में था। लुट्टन सिंह के पक्ष में सिर्फ ढोल की आवाज थी, जिसकी ताल पर वह अपनी शक्ति और दाँवपेंच की परीक्षा ले रहा था और अपनी हिम्मत को बढ़ा रहा था।

प्रश्नः 2 कहानी के किस-किस मोड़ पर लुट्टन के जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आए?

उत्तरः 2 कहानी के निम्नलिखित मोड़ो पर लुट्टन सिंह के जीवन में निम्न परिवर्तन आए। —

बचपन में => लुट्टन के माता-पिता उसे नौ वर्ष की उम्र में ही अनाथ बनाकर चल बसे, किंतु छोटी

उम्र में ही उसकी शादी कर दी गई। फलस्वरूप उसका पालन-पोषण उसकी विधवा सास ने किया।

राज-पहलवान की उपाधी =>

लुट्टन सिंह के जीवन में ये खुशी के पल थे श्याम नगर के राजा ने उसे राजपहलवान घोषित कर दिया और उसका व उसके दोनों लड़कों के खाने पीने का खर्च स्वयं वहन किया।

राज-पहलवान से हटना =>

श्याम नगर के राजा की मृत्यु के बाद राजकुमार के शासन ग्रहण करने के बाद उसे राजपहलवान के पद से हटा दिया गया। फलस्वरूप वह गाँव में रहकर किसान और खेतीहर मजदूरों के बच्चों को कुश्ती सिखाने लगा।

पुत्रों की मृत्यु =>

गाँव में सूखा, अन्न की कमी, मलेरिया और हैजे के कारण अन्य लोगों के साथ उसके दोनों पुत्र भी काल के ग्रास बन गए, किंतु फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी अंत में वह स्वयं भी इसी में मारा गया।

प्रश्न : 3 लुट्टन पहलवान ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं, यही ढोल है ?

उत्तर: 3 लुट्टन पहलवान का कोई गुरु नहीं था, बल्कि वह ढोलक की आवाज के आधार पर ही अपनी शक्ति और दाँवपेंच की परीक्षा लेता था। वह स्वयं भी ढोल की आवाज के आधार पर कुश्ती रखता था और अपने पुत्रों और शिष्यों को ढोलक की आवाज पर ही ध्यान देने के लिए प्रेरित करता था। वह दंगल में उतरकर सबसे पहले ढोलों को प्रणाम करता था इसी कारण उसने कहा होगा कि उसका गुरु कोई पहलवान नहीं यही ढोल है।

प्रश्न: 4 गाँव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहांत के बावजूद लुट्टन पहलवान ढोल क्यों बजाता रहा?

उत्तर: 4 लुट्टन पहलवान गाँव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहांत के बावजूद ढोल के बोल में अपने आपको जिलाये रखने और भूख व महामारी से दम तोड़ रहे गाँव को मौत से लड़ने की ताकत देने के लिए ढोल बजाता है।

प्रश्न: 5 ढोलक की आवाज का पूरे गाँव पर क्या असर होता है?

उत्तर: 5 ढोलक की आवाज सुनकर गाँव के अधमरे, औषधी उपचार, पथ्य-विहीन प्राणियों में संजीवनी शक्ति भर जाती थी। बूढ़े, बच्चे और जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था।

स्पंदन-शक्ति शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी। ढोलक की आवाज़ के कारण ही गाँव के मरते हुए प्राणियों को आँख मूंदते समय कोई तकलीफ़ नहीं होती थी और वे मृत्यु को भी नहीं डरते थे।

प्रश्न: 6 महामारी फैलने के बाद गाँव में सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य में क्या अंतर होता था?

उत्तर: 6. महामारी फैलने के बाद गाँव में सूर्योदय होते ही लोग कराहते-कराहते अपने-अपने घरों से बाहर निकलकर पड़ोसियों और आत्मीय-जनों को परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु पर धैर्य देते थे सूर्यास्त होते ही, लोग अपनी-अपनी झोपड़ियों में घुप जाते, तो पता ही नहीं चलता था, कि वे अंदर हैं। उनकी बोलने की शक्ति भी जाती रही थी। पास में दम तोड़ते हुए पुत्र को अंतिम बार बेटा कहकर पुकारने की भी हिम्मत माताओं की नहीं होती थी।

17/8/24